महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द
का सरस्वती विद्या मंदिर इन्टर कॉलेज, लखीमपुर में आयोजित संयुक्त
वार्षिक समारोह–सह–मेधावी अलंकरण समारोह में सम्बोधन
(दिनांक– 18.12.2015, 11.00 बजे पूर्वा0)

श्री विजय अग्रवाल जी, पंडित दीनदयाल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री शेषधर द्विवेदी जी, डॉ0 सतीश कौशल वाजपेयी जी, अध्यक्ष, पंडित दीनदयाल यू0 एस0 भी0 एम0 इंटर कॉलेज, श्री हरेराम पांडेय जी, प्रधानाचार्य, पंडित दीनदयाल यू0 एस0 भी0 एम0 इंटर कॉलेज (यू0पी0 बोर्ड), श्री सुरेश कुमार गुप्ता जी, प्रबंधक, पंडित दीनदयाल यू0 एस0 भी0 एम0 इंटर कॉलेज, डॉ0 राकेश कुमार जी माथुर, प्रबंधक, एस0 डी0 एस0 भी0 एम0 बालिका इंटर कॉलेज, श्रीमती रश्मि वाजपेयी जी, अध्यक्ष, एस0 डी0एस0 भी0एम0 बालिका इंटर कॉलेज, श्रीमती शिप्रा वाजपेयी, प्रधानाचार्य, एस0डी0 एस0भी0एम0 बालिका इंटर कॉलेज, आमंत्रित अतिथिगण, अभिभावकगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, प्यारे बच्चों, देवियों एवं सज्जनों !

आज यहाँ मेधावी अलंकरण समारोह–सह–संयुक्त वार्षिक समारोह में आपने मुझे आमंत्रित किया, इसके लिए मैं आप सबको हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

आपके विद्यालय का नाम जिस महापुरूष के नाम से जुड़ा हुआ है, वे एक महान तपस्वी, निर्भीक राष्ट्रवादी और प्रखर सामाजिक चिंतक थे। एकात्म मानववाद का उनका दर्शन भारतीय संस्कृति और दर्शन का

समाहार रूप है। इस दर्शन से भारतीय चिंतन–परम्परा को एक सबल और सशक्त आधार मिला है तथा मानवता को एक कुशल मार्ग–दर्शन प्राप्त हुआ है। पंडित उपाध्याय जी का व्यक्तित्व और कृतित्व आज के युवाओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायी और अनुकरणीय है। आज जब चतुर्दिक भौतिकतावाद का प्रकोप जनजीवन को बुरी तरह ग्रसित कर रहा है, तकनीकी और वैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया में मानवीयता और संवेदना पर गहरे संकट के बादल मंडराने लगे हैं, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन–दर्शन हमें इन झंझावातों से उबरने की शक्ति देता है। पंडित दीनदयाल जी के विचार हमें इस बात के लिए ऊर्जा और प्रभा प्रदान करते हैं कि हम अपनी भारतीय संस्कृति, ग्रामीण लोक संस्कृति और स्वदेशी की भावना को कैसे विकसित करें।

इस विद्यालय की स्थापना के समय भूमि–पूजन पूज्य संत महंथ गोपाल दास जी द्वारा किया गया था तथा इस महाविद्यालय का लोकार्पण तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा किया गया था। तब से लेकर आजतक इस विद्यालय की कई प्रतिभाएँ यहाँ से शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत देश और विदेश में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए अपनी प्रशंसनीय सेवाएँ दी है। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय के नाम पर एक विद्यालय की स्थापना श्री विजय जी अग्रवाल का एक सारस्वत स्वप्न था, जिसे उन्होंने अपने त्याग, परिश्रम और दृढ़निश्चय की बदौलत साकार कर दिखाया है।

मुझे बताया गया है कि यू0पी0 बोर्ड एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड दोनों से मान्यताएँ प्राप्त कर यहाँ के विद्यालय शिक्षा जगत् में काफी अच्छी मिशाल पेश कर रहे हैं और इनके विद्यार्थियों के परिणाम भी काफी सराहनीय रूप में प्रकाशित हो रहे हैं।

आज इस समारोह के अंतर्गत मेधावी छात्रों का अलंकरण समारोह भी आयोजित हो रहा है। अपने कठिन परिश्रम और मेधा की बदौलत विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ सफलताएँ अर्जित करते हैं। विद्यालय प्रबंधन और शैक्षणिक विकास से जुड़े संगठनों द्वारा जब उन्हें पुरस्कृत और सम्मानित किया जाता है तो उनका उत्साहवर्द्धन होता है और वे अधिक बेहतर करने की तमन्ना और ख्वाहिशें अपने भीतर संजोने का प्रयास करते हैं। जो विद्यार्थी वीर धनुर्धर अर्जुन की भाँति केवल मछली की आँख अर्थात् अपने लक्ष्य पर अपनी नजर गड़ाये रहते हैं, सफलता उनके कदम चूमती है।

आज के अलंकरण समारोह में सिर्फ 15 प्रतिशत विद्यार्थियों को ही सम्मानित किया गया है। इसका मतलब यह नहीं कि शेष 85 प्रतिशत वालों में प्रतिभा की कमी है। परीक्षा कुछ खास प्रश्नों के उत्तर के आधार पर ली जाती है। जो विद्यार्थी उन प्रश्नों के उत्तर सही रूप लिखते हैं, उन्हें अच्छे अंक मिलते हैं और जिनसे थोड़ी चूक हो जाती है, वे सफलता की दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

प्यारे बच्चों, जिंदगी की दौड़ काफी लम्बी होती है। इस दौड़ में थकना और गिरना दोनों स्वाभाविक हैं। किन्तु, जो गिरकर फिर उठ जाते हैं और सम्भल कर आगे फिर दौड़ में शामिल हो जाते हैं, वे एक–न–एक दिन मंजिल पर पहुँच ही जाते हैं। अपने देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को अंग्रेज कवि रॉबर्ट फ्रास्ट की एक कविता ‘‘च्ेंपदह जीतवनही ंद ॅववकष की कुछ पंक्तियाँ बेहद प्यारी थीं, जिन्हें मैं आपके बीच उद्धृत करना चाहता हूँ– ष्जीम ॅववके ंतम सवअमसल कंता ंदक कममच ६ ठनज प् ींअम चतवउपेमे जव ाममच ६ ।दक उपसमे जव हव इमवितम प् ेसममच ६ ।दक उपसमे जव हव इमवितम प् ेसममचण् भावार्थ यह कि जंगल बड़ा घना और लुभावना है, किन्तु हमने कुछ वादे किए हैं जिन्हें हमें हरगिज़ निभाना है, सोने के पूर्व हमें मीलों दूर जाना है, सोने के पूर्व हमें मीलों दूर जाना है।

अंग्रेज कवि राबर्ट की इन पंक्तियों का मतलब साफ है कि मनुष्य अगर दृढ़निश्चयी है, तो वह जंगल अर्थात् इस दुनियाँ के गहनतम अंधेरे को भी चीरकर अपनी राह बना सकता है।

मित्रों, हमें आज अपने राष्ट्रीय वैभव और विरासत पर पूरा गर्व रखते हुए वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नए देश और समाज के नवनिर्माण में पूरे संकल्प के साथ लग जाना है। विचारों की उदारता और प्रगतिशीलता हमारी भारतीय संस्कृति की आत्मा रही है। धार्मिक सदाशयता और सदभावना हमारी मूल पूँजी रही है। भारतीय

मूल्यों का रक्षण और संवर्द्धन हमारा मूल दायित्व है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना हमारी सहिष्णुता का परिचायक रही है। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्व सन्तु निरामया'' की मंगल कामना हमारे साहित्य और सम्पूर्ण वांगमय की आत्मा रही है। अपनी इसी थाती पर हमारी छाती बराबर चौड़ी रही है और हमें पूरे विश्व से सम्मान और समादर भी मिला है। हमें अपनी विरासत को जुगाए हुए रखना है तथा अपनी शक्ति और गति को जगाए चलना है। समाज में जो दुःखी हैं, पीड़ित हैं, अभिवंचित हैं, उनकी सेवा और कल्याण के प्रति हमारी सजगता और तत्परता सामाजिक समरसता और शांति बहाल रखने में सहायक होगी। आपके महाविद्यालय का नाम जिस मनीषी से जुड़ा हुआ है उनका शिक्षा के प्रति क्या विचार था, वे शिक्षा क्षेत्र में कैसी प्रगति चाहते थे, इसे जानना वर्त्तमान परिवेश में भी अत्यंत प्रासंगिक होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का स्पष्ट अभिमत था कि ''लिपि ज्ञाप अथवा भाषा ज्ञान से शिक्षा का पूर्ण उद्देश्य सिद्ध नहीं होता। अध्यापन के अंतर्गत वे सब क्रियाएँ आती हैं, जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति या व्यक्तिसमूह अपने पास के ज्ञान को दूसरे को देने का चेतनापूर्वक प्रयास करता हो। यह प्रयास पाठशालाओं और विश्वविद्यालयों में ही नहीं, घर–घर में तथा खेत–खलिहान, कारखानों, दुकानों, कला–भवनों, खेल के मैदानों और मलशालाओं में भी चलता रहता है।'' अभिप्राय यह कि जीवन का सर्वांगीण और समग्र विकास शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। मुझे विश्वास

है आपको अपने विद्यालय में इस दृष्टि से भी सोचने–विचारने और अमल करने के लिए प्रेरित किया जाता होगा।

प्यारे छात्रों और मेरे अभिन्न मित्रों, मैं इस समारोह के माध्यम से आप सबके सफल जीवन की शुभकामना करता हूँ और आपको नववर्ष की अशेष मंगलकामनाएँ देता हूँ। आपका नववर्ष सुःखद, आनंदपूर्ण और समृद्धिमय हो। आपने मुझे आमंत्रित कर सम्मानित किया, इसके लिए आप सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। एकबार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद !

जय हिन्द !

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।

मुझे बताया गया है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सन् 1942 में अपनी शिक्षा–दीक्षा पूर्ण करने के उपरान्त लखीमपुर खिरी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था। स्वाभाविक है इस क्षेत्र के लोग पंडित उपाध्याय जी के निकट सानिध्य में रहे हैं और उनके विचार और दर्शन से प्रेरित–प्रभावित रहे हैं। मुझे विश्वास है यह संस्था भी पंडित जी के विचारों और संदेशों की अनुगामिनी बन अपने छात्रों में राष्ट्रीयता, सामाजिक संवेदना और चरित्र–बल विकसित करने का भरपूर प्रयत्न कर रही होगी।